

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था

अजय : अनुपमबाबु, आपनि आपनार मेयेके कौन स्कूले भर्ति करलेन?

अजय : अनुपम जी, आपने अपने लड़की को किस स्कूल में भर्ती करवाया है?

अनुपम : आजकाल बाछादेर भाल स्कूले भर्ति करा खुब कठिन व्यापार। आमि आमार मेयेके अमलबाबुर साहाये शेष पर्यन्त 'ाँउन स्कूले भर्ति करे दियेछि।

अनुपम: आजकल बच्चों को अच्छे स्कूल में भर्ती करवाना तो बहुत कठिन है। मैं ने अपनी लड़की को अमल जी की सहायता से टाउन स्कूल में भर्ती करवा दिया है।

अनिल : शुनेछि, 'ाँउन स्कूले शिक्षकरा यत्न निये पड़ान।

अनिल : सुना है, टाउन स्कूल में शिक्षकगण अच्छा पढ़ाते हैं।

अजय : तबुओ, बाड़िते पड़ानोर जन्ये एक-जन शिक्षक थाका दरकार।

अजय : फिर भी, घर पर पढ़ाने के लिए एक शिक्षक की व्यवस्था करना आवश्यक है।

अनुपम : हँया। आमि एकजन गृहशिक्षक रेखेछि। तिनि बाड़िते एसे आमार मेयेके पड़ान। तिनि आगे हिन्दुस्कूले पड़ानेन। एखन ओखान थेके उनि अबसर नियेछेन।

अनुपम: हाँ। मैंने एक गृहशिक्षक रख लिया है। वे घर आकर मेरी लड़की को पढ़ाते हैं। वे पहले हिंदू स्कूल में पढ़ाते थे। अब उन्होंने वहाँ से अवकाश ग्रहण कर लिया है।

अजय : आच्छा! आपनार मेयेर गृहशिक्षक कि आमार छेलके पड़ाबेन? आमि आमार छेलेर जन्येओ एकजन गृहशिक्षकेर व्यवस्था करेछि। किन्तु तिनि ठिकभावे पड़ान ना। आपनि आपनार मेयेर गृहशिक्षकके जिज्ञासा करे आमाके जानाबेन।

अनुपम : हँगा हँगा निश्चय। आमि आजम्प ओनार सङ्गे कथा बले आगामीकाल आपनाके जानाव।

अनिल : अनुपमबाबु आपनि आपनार मेयेके कि कोथाओ गान शेखाते पाठाच्छेन?

अनुपम : ना, आमि ओके गान आर शेखाच्छि ना। कारण काछाकाछि कोन गानेर कुल नेम्प। ताछाड़ा एखाने गान शेखानोर शिक्षकओ नेम्प। किन्तु आमि आमार मेयेके नाच शेखानोर व्यवस्था करेछि। ओके 'उदयन' नाचेर कुले भर्ति करे दियेछि।

अनिल : खुब ভাল। आजकाल

अजय : अच्छा! क्या आपकी लड़की के गृहशिक्षक मेरे लड़के को भी पढ़ाएँगे? वैसे मैंने अपने लड़के के लिए एक गृहशिक्षक की व्यवस्था की है। किन्तु वे ठीक तरह से पढ़ाते नहीं हैं। आप अपने लड़की की गृहशिक्षक से पूछकर मुझे बताइए।

अनुपम: हाँ हाँ जरूर। मैं आज ही उनसे बात करके कल आपको बता दूँगा।

अनिल : अनुपम जी, क्या आप अपनी लड़की को कहीं संगीत सीखने के लिए भेज रहे हैं?

अनुपम: नहीं, मैं उसे संगीत सीखने के लिए नहीं भेज रहा हूँ। क्योंकि आस-पास कोई भी संगीतशाला नहीं है। उसके अलावा यहाँ कोई संगीत सिखाने वाला शिक्षक भी नहीं है। लेकिन मैंने अपनी लड़की को नृत्य सिखाने की व्यवस्था की है। उसको 'उदयन' नृत्यशाला में भर्ती करवा दिया है।

अनिल : बहुत अच्छा है। आजकल लड़के लड़कियों को स्कूली शिक्षा के साथ साथ दूसरी कलाओं का ज्ञान भी दिलवाना चाहिए। इसीलिए मैं भी अपने लड़के को सितार सिखवा रहा हूँ। किन्तु चिंता का विषय यह है कि उसका मन पढ़ाई में बिलकुल

छेलेमेयेदेर विद्याशिक्षार सञ्जे
सञ्जे अन्या किछु शेखानो भाल।
तार जन्ये आमिओ आमार
छेलेके सेतार शेखाछि। किन्तु
दुश्चित्तार विषय हल ये पडाशोनाय
ओर मनस्प वसे ना। आमि अनेक
बोझास्प किन्तु ओ किछुतेस्प बुरते
चास्पछे ना।

अजय : आपनि एस्प व्यापार निये किछु
चित्त करबेन ना। बड़ हले ओ
ठिकस्प बुरते पारबे।

अनुपम : आजकालकार छेलेमेयेदेर
शिक्षार प्रति ये अनाग्रह, तार
जन्ये आमादेर शिक्षापद्धतिस्प
दोषी। छात्र-छात्रीदेर उपर
पाठ्यक्रमे बोरु चापिये देओया
हयेछे। एना कमानोर जन्ये
संसदेओ अनेक अलोचना हयेछे।
एमन कि अनेक सूचित्तक
सदस्यगणओ अनेकवार पाठ्यक्रमे
बोरु कमार जन्ये प्रस्ताव
करेछेन। किन्तु आज पर्यन्त किछुस्प
हयनि।

अनिल : यदि अतिभावकरा एस्प

नहीं लगता। मैं उसे बहुत समझाता
हूँ किंतु वह किसी भी प्रकार से नहीं
समझ पा रहा है।

अजय : आप इस बात की चिंता मत
कीजिए। बड़ा होने पर वह खुद ही
समझ जाएगा।

अनुपम: आजकल के लड़के लड़कियों में
शिक्षा के प्रति जो अरुचि है उसके
लिए हमारी शिक्षा पद्धति ही दोषी
है। छात्र छात्राओं पर पाठ्यक्रम का
बहुत अधिक बोझ लाद दिया गया
है। उसे कम करने के लिए संसद
में भी काफ़ी विचार-विमर्श हुआ है।
केवल यही नहीं अनेक सुचित्तक
सांसदों ने कई बार पाठ्यक्रम का
बोझा कम करने के लिए अपने
प्रस्ताव रखे हैं। किंतु आजतक कुछ
भी नहीं हो सका।

अनिल : यदि अभिभावकगण इस के बारे में
जागरुक हो जाएँ तो संभवतः इस
समस्या का समाधान निकल आए।

अजय : अब इस व्यवस्था में परिवर्तन के
लिए आंदोलन के अलावा और कोई
भी उपाय नहीं बचा है। लगता है
इसी शिक्षा व्यवस्था के बीच ही हमें
अपने बच्चे-बच्चियों को पढ़ाना
पड़ेगा।

अनिल : आप सही कह रहे हैं।

ब्यापारे सचेतन ह्ये यान
ताहले संभवतः एस्प समस्यार
समाधान बेरिये आसवे।

अजय : आप की लड़की के गृहशिक्षक मेरे
लड़के को पढ़ाएँगे या नहीं उस के
बारे में आप उनसे पूछकर मुझे
जल्दी बता दीजिएगा।

अजय : এখন এষ্প ব্যবস্থা পরিবর্তনের
জন্যে আন্দোলন ছাড়া কোনস্প
উপায় নেস্প। মনে হয়, এষ্প শিক্ষা
ব্যবস্থার মধ্যেস্প আমাদের ছেলে-
মেয়েদের পড়াতে হবে।

অনিল : জরুর।

অজয় : अच्छा, अब मैं चलता हूँ।

অনিল : আপনি ঠিক বলছেন।

অজয় : আপনার মেয়ের গৃহশিক্ষক আমার
ছেলেকে পড়াবেন কি না আপনি
একু ওনাকে এষ্প ব্যাপারে
জিজ্ঞাসা করে আমাকে তাড়াতাড়ি
জানাবেন।

অনিল : অবশ্যস্প।

অজয় : आच्छा, এখন আমি চলি।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
ব্যবস্থা	व्यवस्था
করলেন	करवाया
সাহায্য	सहायता
যত্ন	अच्छा, सावधानी

পড়ান	पढ़ाते हैं
রেখেছি	रखा है
গান	गाना, संगीत
পাঠাচ্ছেন	भेज रहे हैं
নাচের স্কুল	नृत्यशाला
সেতার	सितार
দুশ্চিন্তা	दुश्चिन्ता, चिन्ता की
পড়াশুনা	पढ़ाई
কিছুতেস্প	किसी भी तरह
বোঝা	बोझ
পাঠ্যক্রম	पाठ्यक्रम
চাপিয়ে দেওয়া	लाद दिया
সুচিন্তক	सुचिन्तक
প্রস্তাব	प्रस्ताव
অভিভাবকরা	अभिभावकगण
সম্ভবত	संभवतः
পরিবর্তনের	परिवर्तन के
ছাড়া	अलावा
উপায়	उपाय

অভ্যাস

I. नीचे दाग देওয়া শব্দের বদলে বন্ধনীতে দেওয়া শব্দ থেকে উপযুক্ত শব্দ বেছে নিয়ে নতুন বাক্য গঠন করুন।

1. একজন গৃহশিক্ষক আমার মেয়েকে বাংলা পড়ান। (শেখেন/শেখান/শেখাবেন)

2. আমি তাকে অনেক বোঝাম্প।

(খাম্প/খাওয়াম্প/খাওয়ান)

3. সে আমাকে কলকাতা দেখাবে। (ঘুরবে/ঘোরাবে/ঘুরছে)
4. কে তাকে চিঠি পাঠালো? (দেখালো/দেখলো/দেখাবো)
5. ওকে গান আর শেখাচ্ছি না। (শোনাচ্ছি/শুনছি/শুনব)

II. নীচে দেওয়া বাক্যগুলিতে রেখাঙ্কিত শব্দের বদলে উপযুক্ত শব্দ প্রয়োগ করে নতুন বাক্য রচনা করুন।

1. আমি কাজী করলাম।
2. তিনি গান শেখেন।
3. সে বাংলা পড়ে।
4. আমি আপনার জন্য মিষ্টি আনব।
5. তুমি আজ রসগোল্লা খাও।

III. বন্ধনীতে দেওয়া শব্দ থেকে উপযুক্ত শব্দ বেছে নিয়ে বাক্য পূর্ণ করুন।

1. আপনি আমাকে খবরটা _____।
(জানবেন, জানলেন, জানেন, জানাবেন)
2. সে লিপিকাকে ছবি _____।
(দেখাচ্ছে, দেখছে, দেখে, দেখেছে)
3. আমি তাকে অনেকবার _____।
(বুঝলাম, বুঝালাম, বুঝেছি, বুঝবো)
4. তুমি আমাদের গান _____।

(শোনাব, শোনাও শুনবো, শোনে)

5. আমি কথীা তাকে _____ ।

(জানালাম, জানালো, জানবো, জানলাম)

I. অনুচ্ছেদী পড়ে এমন পাঁচি শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলির অর্থ নিচে দেওয়া হয়েছে।

কোনো বাগান তৈরী করতে ও তাকে যথাযথ রাখতে বাগানের যত্ন নেওয়া দরকার। বাগানের গাছ ও ফুল যাতে নষ্ট না হয় সময় মত জল, সার দিতে হয় এবং নির্দিষ্ট সময় অন্তর মাঁি পালিতে হয়। লক্ষ্য রাখতে হবে, সারের সাথে এমন কিছু জিনিস না দেওয়া হয়, যাতে ফুল ও ফলের ক্ষতি হয়। ঠিকমত যত্ন নিলে গাছে সুন্দর থোকা থোকা ফুল ফুঁবে। এম্প ফুল যেন ঈশ্বরের পাঠানো কোনো শুভবার্তা মনে হয়। তাম্প সঠিক বাগান চর্চা খুব সহজ কাজ নয়।

(ঠিকঠাক, বদল, সংবাদ, নির্ধারিত, ধ্বংস)

II. অনুচ্ছেদী পড়ে এমন পাঁচ জোড়া শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলি বিপরীতার্থক শব্দ।

মায়ের কাছে তার সন্তানম্প সব থেকে বেশি প্রিয়। এমন কোনো মা পৃথিবীতে নেম্প যার কাছে তার সন্তান অপ্ৰিয় হয়। মা যতম্প অনভিজ্ঞ হোক, সে তার সন্তানের যথাসাধ্য যত্ন নেয়। সন্তান কিছু না বলতেম্প মা সন্তানের সুবিধা-অসুবিধা বুঝতে পেরে যায়। তাম্প মা সময় মতম্প পোষাক পরিবর্তন, খাবার আনা, খেতে দেওয়া প্রভৃতি সব কাজম্প করেন। মায়ের সর্বদা এম্প লক্ষ্যম্প থাকে যেন তার সন্তানের কোনো ক্ষতি না হয়, অযত্ন যেন না হয়। সন্তান কোথাও পড়ে গিয়ে কোথাও লাগলে, সে ব্যথা মায়ের বুকে বহুগুণ বেশি হয়ে লাগে।

তাম্প মায়ের ভালোবাসা চিরকাল অপরিবর্তনীয়।

IV. একী বাক্যকে দুী বাক্যে বিশ্লেষণ করুন।

উদাহরণ : সুমনার একী সবুজ জামা আছে।

সুমনার একী জামা আছে। যার রঙ সবুজ।

1. दीपार एकर् कालो सोयोर आछे।
2. शीतकाल, बागाने आर फुल नेम्प।
3. प्रदीप खुब सुन्दर गान गाय।
4. आमार फोा फुल देखते खुब ভালो लागे।
5. पृथिवी खुब सुन्दर जायगा।

V. दुाँ बाक्यके एकर् बाक्ये परिणत करुन।

उदाहरण : राम एकर् छेले। से खुब ভালो।

राम एकर् ভালो छेले।

1. फुलदानीते एकर् गोलाप आछे। गोलापार रङ लाल।
2. एखान थेके एकर् पाहाड़ देखा यय। योँ खुब दूरे अवस्थित।
3. ओखाने दोयाते कालि आछे। यार रङ नील।
4. ऐशी एकर् मेये। ऐशी खुब शात्त।
5. अमलदेर बाड़िर पाशेम्प एकर् बिल आछे। ओदेर बाड़िर पाशेर बिलर्ति शीतकाले प्रचुर पाथि आसे।

VI. उपयुक्त शब्द प्रयोग करे बाक्य पूर्ण करुन।

1. से _____ ভালबासे।
2. छेलोकै केउ _____ चाम्पलो ना।
3. उदयने गान _____ ब्यबस्था नेम्प।
4. सब कथा _____ प्रयोजन नेम्प।
5. तिनि सिनेमा _____ बाड़ि फिरलेन।

VII. नीचे देওয়া प्रश्नগুলির উত্তर दिन।

1. অনুপমবাবু ও অনিলবাবুর মধ্যে কি বিষয়ে আলোচনা হচ্ছিল?
2. অনুপমবাবু কেমন করে মেয়েকে স্কুলে ভর্তি করালেন?
3. স্টাউন স্কুলের শিক্ষকরা কেমন পড়ান?
4. অনুপমবাবুর মেয়ের গৃহশিক্ষক আগে কোথায় পড়াতেন?
5. পড়াশুনা ছাড়া অনুপমবাবুর মেয়ে আর কি শিখছে?
6. অনিলবাবু নিজের ছেলেকে কি শেখাচ্ছেন?

পড়ে বুঝুন

শিক্ষা পদ্ধতির বিবর্তন

শিক্ষা প্রণালী মঁ পরিবর্তন

ভারতবর্ষের বৈদিকযুগ থেকে যে শিক্ষা ব্যবস্থার সূচনা হয়েছিল তা ছিল অত্যন্ত বৈজ্ঞানিক পদ্ধতির মাধ্যমে। শিশুকালে শিশুরা গুরুগৃহে শিক্ষাগ্রহণের জন্য যেত। সেখানে গুরু তাদের বিদ্যা শিক্ষার সাথে সাথে জীবন শিক্ষাও দিতেন। গুরু তাদের এমনভাবে শিক্ষা দিতেন বা এমন সব কাজ করতে দিতেন যা তাদের জীবনের সমস্ত রকম প্রতিকূলতা অতিক্রম করতে পারত। সেখানে জীবনাচারণ সম্পূর্ণ ভিন্ন ছিল। সেসব কারণে শিক্ষার মূল বিষয়সম্প ছিল জীবন শিক্ষা ও প্রকৃতজ্ঞান। ধীরে ধীরে সময়ের সাথে সমাজের পরিকাঠামোও পরিবর্তিত হতে লাগল। মানুষ আর আগের নিয়মে জীবন ধারণ করতে সক্ষম হলো না। পরিস্থিতি পরিবর্তনের সঙ্গে মানুষের জীবিকারও পরিবর্তন হতে লাগল। মানুষের জীবিকার পরিবর্তনের প্রভাব শিক্ষা ব্যবস্থার মধ্যেও প্রভাবিত হতে দেখা গেল। আস্তে আস্তে শিক্ষা পদ্ধতির বিবর্তন হতে দেখা গেল। একসময় ভারতবর্ষ সম্পূর্ণ অশিক্ষার অন্ধকারে নিমার্জিত ছিল। বিভিন্ন শাসন ব্যবস্থা ও রাজনৈতিক পালা বদলের সাথেসঙ্গে ভারতের সামাজিক জনজীবনেও যথেষ্ট প্রভাব পড়েছিল। শেষ পর্যন্ত স্পংরেজ শাসন স্থাপনের সূচনা লগ্নে ভারতের স্পতিহাসের ক্ষেত্রে আবার আর এক পালাবদল হইল। অশিক্ষার অন্ধকার এবং কুসংস্কার পূর্ণ ভারতবর্ষে স্পংরেজ শাসকগণসম্প শিক্ষার আলো জ্বালালো। তারা নিজেদের প্রয়োজনেসম্প বিভিন্ন বিদ্যালয় স্থাপন করতে শুরু

করল; সেম্প বিদ্যাশিক্ষা ছিল কেবল তাদের প্রয়োজন সাধনের জন্য। তখন তারা তাদেরসম্প ভাষার মাধ্যমে শিক্ষা ব্যবস্থার সূচনা করেন। সেখান থেকে শুরু হয় আধুনিক শিক্ষা পদ্ধতি। এরপর রামমোহন রায় বিদ্যাসাগর প্রমুখ মহান ব্যক্তিগণ বাংলা শিক্ষা ও বাঙালীর শিক্ষা সম্বন্ধে প্রথম পদক্ষেপ নেন। বিদ্যাসাগর মহাশয়ের উদ্যোগেসম্প অনেক বিদ্যালয় স্থাপন করা হয়। তারপরসম্প নারী শিক্ষার সূচনা হয়।

যে শিক্ষা তখন দেওয়া হত সেম্প শিক্ষা ছিল যথেষ্ট উপযোগী শিক্ষা। তারপরসম্প যে শিক্ষার সূচনা হয় সেখানে কেবল মুখস্থ বিদ্যা ও পুথিগত বিদ্যাসম্প প্রধান সেম্প বিদ্যাশিক্ষা ব্যবহারিক জীবনে কোনোভাবেসম্প কার্যকারী হত না। কেবলমাত্র শিক্ষার বোঝাসম্প বাড়ত কিন্তু কোনোভাবেসম্প তা কার্যকারী হত না। প্রকৃতজ্ঞান বা শিক্ষা হত না।

বর্তমান শিক্ষা পদ্ধতি অনেকা সেম্প প্রকারসম্প। সেখানে কেবলমাত্র শিক্ষার বোঝার বৃদ্ধি হচ্ছে অথচ কোনোরকমভাবে সেম্প বিদ্যা কোনো ব্যবহারিক জীবনে কার্যকারী করা যাচ্ছে না। শিশুকাল থেকে মা-বাবা ও বর্তমান শিক্ষা ব্যবস্থা শিশুদের কেবল চাপ প্রদান করছে এবং তাদের জীবনে বড় হওয়ার অর্থ ডাক্তার স্পঞ্জিনিয়ার হওয়া এবং অর্থ উপার্জন করা বোঝাচ্ছেন। ফলে তারাও সেম্প দিকেসম্প একমুখী হয়ে কেবল দৌড়াচ্ছে আর দৌড়াচ্ছে। তারাও ভাবতে পারে না অন্যভাবেও জীবনযাপন করতে পারে। বড় হওয়া মানে বড়লোক বা ধনী হওয়া নয়, বা কেবলমাত্র নিজের প্রতিষ্ঠা নয়। বড় হওয়া মানে সার্বিকভাবে মহান হওয়া। আমাদের দেশে এমন শিক্ষার দরকার যেখানে ছাত্রছাত্রীদের স্পচ্ছামত স্বাধীনভাবে ভালোলাগা বিষয় নিয়ে পড়তে পারে। সেখানে কোনো বোঝা চপিয়ে দিলে চলবে না। ছাত্রছাত্রীদের পাঠ্যক্রম শিক্ষা যেন বোঝা না হয়ে সঙ্গী হয় সেম্প দিকেসম্প নজর দিতে হবে। ছাত্রছাত্রীদের এমন শিক্ষা দিতে হবে যাতে তাদের দেশের ও দেশের প্রতি সচেতনতা বৃদ্ধি পায়, তারা উচ্চশিক্ষিত হয়ে যাতে দেশের বাস্পরে চলে না যায়। বহু ভালো বুদ্ধিমান ছাত্রছাত্রীরা লেখাপড়া শিখে বিদেশে পাড়ি দেয় কেবল অতিরিক্ত স্বাচ্ছন্দ্য ও বিলাসিতার লোভে কিন্তু ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে থেকে এসম্প প্রবনতা কমিয়ে তাদের দেশের প্রতি ভালোবাসা বাড়াতে হবে। সেম্প শিক্ষিত

বুদ্ধিমান ছাত্রছাত্রীদের আমাদের দেশের উন্নতি, শিক্ষা প্রভৃতি কাজে নিযুক্ত করতে হবে।
তার জন্য আমাদের শিক্ষা পদ্ধতির পরিবর্তন করতে হবে।

শব্দার্থ

শব্দ	অর্থ
বৈদিক	বৈদিক
প্রতিকূলতা	প্রতিকূলতা
অতিক্রম	অতিক্রম
জীবনাচারণ	জীবনচর্যা
প্রকৃত	প্রাকৃতিক
পরিকাঠামো	গঠন
পরিবর্তিত	পরিবর্তন
জীবিকা	জীবিকা
প্রভাব	প্রभाव
প্রভাবিত	প্রभावित
বিভিন্ন	বিभिन्न
শাসন	शासन
পালাবদল	दलबदल
সামাজিক	सामाजिक
অশিক্ষা	अशिक्षा
সাধন	साधन
পদক্ষেপ	कदम
উদ্যোগেঙ্গ	उद्योग

स्थापना	स्थापना
उपयोगी	उपयोग, प्रयास
व्यवहारिक	व्यवहारिक
कार्यकारी	उपयोगिता
हওয়া	होना
प्रकार	प्रकार
मुखश्च	कंठस्थ
प्रदान	प्रदान
एकमुखी	एकनिष्ठ
धारण	धारण
जीवनधारा	जीवनधारा
संगी	संगी, साथी
अतिरिक्त	अत्यधिक
स्वाच्छन्द्य	सुविधा
विलासिता	विलासिता, विलास भाव
प्रवणता	अभिलाषा

अभ्यास

I. नीचे देওয়া प्रश्नर उतर लिखुन।

1. वैदिकयुगे भारतवर्षे कि माध्यामे शिक्षा व्यवहारर सूचना हयेछिल?
2. वैदिकयुगे शिशुकाले शिशुरा कोथाय शिक्षा लाभेर जन्ये येत?
3. स्पंर्रेज शासकगण केन विद्यालय स्थापन करेछिल?
4. कारा बांगला शिक्षा ओ बांगालीर शिक्षा सन्धके प्रथम पदक्षेप नेय?

5. বর্তমান ছাত্রছাত্রী কিসের পিছনে ছুঁছে?
6. বর্তমানে ছাত্রছাত্রীদের কেমন শিক্ষা দেওয়া দরকার?
7. ভালো ছাত্রছাত্রীদের কি প্রবণতা লক্ষ্য করা যায়?

II. অনুচ্ছেদটি পড়ে এমন সার্ভ শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলির অর্থ নিচে বন্ধনীতে দেওয়া আছে।

শিক্ষাম্প শক্তি। কোনো ব্যক্তির সঠিক শিক্ষা না হলে সে সব পরিস্থিতি মানিয়ে নিতে পারে না। সঠিক শিক্ষায় সব প্রতিকূল পরিবেশ থেকেস্প সে বেরিয়ে আসতে পারে। অবস্থা পরিবর্তনের সাথেস্প সকল কিছু পরিবর্তন করার মত অভ্যেস রাখা দরকার।

(সামর্থ্য, লেখাপড়া, অবস্থা, উপযুক্ত, রূপান্তর, রীতি, বিপরীত অবস্থা।)

III. অনুচ্ছেদটি পড়ে এমন পাঁচটি শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলির বিপরীতার্থক শব্দ নিচে বন্ধনীতে দেওয়া আছে।

বাংলায় একটা প্রবাদ আছে ‘অল্প বিদ্যা ভয়ংকরী’। অর্থাৎ যার যত কম বিদ্যা সেস্প বেশী জ্ঞানীর মত কথা বলে। আর যে সত্যস্প বুদ্ধিমান সে কখনস্প তার বিদ্যার বা জ্ঞানের পরিচয় কাজে দেখায় কিন্তু কথায় নয়। কোনো বিশেষ ক্ষেত্রেও প্রয়োজনীয় পরিস্থিতিতেস্প জ্ঞানী ব্যক্তি তার জ্ঞান ও বিদ্যার পরিচয় দেয়।

1. যার লেখাপড়া বিশেষ নেস্প
2. যার বুদ্ধি আছে
3. যার জ্ঞান নেস্প
4. যে পরিস্থিতি অনুকূল নয়
5. সত্য নয়

IV. হিন্দিতে অনুবাদ করুন।

- A. बाबा मायेर एकमात्र स्नेहेर सम्बलम्प हल तादेर सन्तान। बाबा मा तादेर सन्तानके निजेदेर स्नेहेर छायाय मानुष करेन। सन्तानके बाबा मा शेखान ये कोनो प्रतिकूल परिबेशे किताबे मानिये निये चलते हय। शैशव थेकेम्प ताके शेखानो हय, कखन कोथाय खाओया, किताबे कथा बला उचिं, कखन कि करा उचिं, सब किछुम्प तार हात धरे शेखाय। शुधु ताम्प नय निजेदेर सकल स्वाच्छन्द्य छेड़े दियेओ तार सन्तानदेर मानुष करेन, सन्तानदेर सुख स्वाच्छन्द्येर दिके नजर देन। बाबा मा तार सन्तानदेर निःस्वार्थताबे यथासम्भव स्वाच्छन्द्य दिये मानुष करेन। ताम्प सन्तानदेरओ बाबा मायेर बयसकाले तादेर यत्न निते शेखा उचिं।
- B. विद्यासागरेर आसल नाम ईश्वरचन्द्र बन्द्योपाध्याय। तार पितार नाम श्री ठाकुर दास बन्द्योपाध्याय, मातार नाम भगवती देवी। विद्यासागर छेलेबेला थेकेम्प लेखापड़ाय मनयोगी छिलेन एवं तिनि खुब दयालुओ छिलेन। तिनि कारोर दुःखकष्ट देखे चुप करे थाकते पारतेन ना। तिनि छौ बड़, धनी दरिद्र -- सवार दुःखेम्प बाँपिये पड़तेन। तिनि छेलेबेलाय तार पाठशालाय पड़ाशोना शेष करेन ओ बाबार हात धरे मेदिनीपुर थेके कोलकाताय आसेन पाये है। पथेम्प तिनि एक थेके एकशो पर्यन्त स्पर्णराज्जीते संख्या शिखे फेलेन। कोलकाताय एसे तिनि संस्कृत कलेजे भर्ति हन एवं सेखाने तिनि तार मेधार परिचय देन। सेखानेम्प तिनि मात्र एकुश बछर बयसे 'विद्यासागर' उपाधि लाभ करेन। तारपरम्प तिनि भारतेर अशिक्षाजनित समस्यार सम्मुखीन हन। ताछाड़ा तखन नारीदेर बाल्य विवाहेर प्रचलन छिल, सेम्प अन्नबयसी मेयेरा विधवा हले तादेर प्रचण्ड कष्ट ओ दुर्दशार मध्ये जीवनापन करते हत। विद्यासागर नारीदेर एम्प दुर्दशा देखे सह्य करते पारनेन नि ताम्प तिनि विधवा नारीदेर पुनर्विवाह प्रचलन करेन एवं नारी शिक्षार प्रचलनओ करेन। तिनि नारी शिक्षार जन्य बहू विद्यालय स्थापन करेन एवं तिनि नानान रचना करेन। येमन -- वर्णपरिचय, कथामाला, स्रीतार वनवास स्मृत्यादि।

সেঙ্গ সময় তাঁকে বহু জন অপবাদ দেন, তাকে বহু অপমান সহ্য করতে হয়। তবুও তিনি মাথা নত করেন নি, হতাশ হননি এঙ্গভাবে নানান অঙ্গুবিধার মধ্যে তিনি বিধবা বিবাহ এবং নারীশিক্ষার প্রচলন করেন। তাম্প আজও তিনি সবার মনে উজ্জ্বল হয়ে আছেন।

V. বাংলায় অনুবাদ করুন।

गाँधी जी ने शिक्षण पद्धति और शिक्षा के आधारभूत मूल्यों पर भी हमें अपने महत्वपूर्ण विचार दिए हैं। उनकी शिक्षा आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ानेवाली शिक्षा है। उसे उन्होंने बुनियादी शिक्षा कहा। बुनियादी का अर्थ हुआ “आधारभूत”। इस शिक्षा में पढ़ने के साथ जीवन के व्यवहारिक पक्षों और नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है। गाँधी जी, जैसा कि, सब जानते हैं गुजरात के पोरबंदर में जन्मे थे। लेकिन वे पूरे भारत को अपनी जन्मभूमि मानते थे। इसीलिए वे महात्मा अर्थात् महान आत्मावाले सर्वमान्य विचारक माने जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका दृष्टिकोण व्यापक था।

गाँधी जी की इस बुनियादी शिक्षा को और अधिक संगत बनाने के लिए गुजरात के प्रसिद्ध शिक्षाविद ‘भिजुभाई’ का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उनका पूरा नाम भिजुभाई बधेका था। इनका जन्म गुजरात के सौराष्ट्र में 15 नव. 1885 में हुआ था।

भिजुभाई ने 1909 ई. में मुंबई में रहकर कानून की शिक्षा प्राप्त की और वकालत करने लगे। 1920 ई. में उन्होंने वकालत छोड़ दी और बालशिक्षा के लिए समर्पित भाव से काम करने लगे। कानून से शिक्षा क्षेत्र में आने के पीछे गाँधी जी की प्रेरणा प्रमुख थी। 1930 में भिजुभाई ने गाँधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। वहीं उन्होंने सत्याग्राही शिवरों में अक्षरज्ञान दिया। यहीं से उनका ध्यान प्रौढ़शिक्षा की ओर गया। उन्होंने गाँधी जी की शिक्षानीति का गहन अध्ययन किया। भिजुभाई ने 1925 ई. में प्रथम मांटेसरी सम्मेलन और 1928 ई. में द्वितीय मांटेसरी सम्मेलन भावनगर में आयोजित किए। 1938 ई. में राजकोट में भिजुभाई ने “अध्यापन” मंदिर की स्थापना की। वे आदर्श शिक्षक के साथ-साथ एक प्रबुद्ध चिंतक तथा सृजनशील लेखक भी थे। उन्होंने बालशिक्षा पर एवं शिक्षा के विभिन्न विषयों पर 200 पुस्तकें लिखी हैं। उनकी राय में समय, काल और परिस्थितियों के मान से हमें नये नये प्रयोग करते रहना चाहिए। भिजुभाई नवाचार रीति के प्रबल प्रवर्तक, प्रेरक और पोषक थे। वे प्रतिदिन और प्रतिवार नवाचार करते रहने पर बल देते हैं। वे कहते हैं कि जो शिक्षक सतत नवाचार करता रहता है वह कभी भी अपनी कक्षा में तथा शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल नहीं हो सकता। भिजुभाई का नवाचार हमें करके सीखने का संदेश देता है। वह कहने पर कम और करने पर अधिक बल देते हैं। ‘पहले करो, फिर कहो’ यह उनका सूत्रवाक्य है। 23 जून 1939 को मुंबई में उनका स्वर्गवास हो गया।

VI. আপনার বিদ্যালয়ের দিনগুলির স্মৃতির ওপর একটি ছোট্ট নিবন্ধ লিখুন।

टिप्पणियाँ

इस पाठ में प्रेरणार्थक क्रिया के वाक्यों का परिचय दिया गया है। क्रिया के प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए स्वरान्त क्रियाओं के मूल रूप के साथ 'ओय' (ओया) तथा व्यंजनांत क्रियाओं के मूल रूप के साथ 'आ' (आ) जोड़कर पुरुष वाचक प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे :

आमि तोमाके थाओयाम्प/शेथाम्प।

मैं तुम्हें खिलाती/सिखाती हूँ।

आपनि/तिनि आमाके

आपने/उन्होंने मुझे खिलाया/सिखाया।

थाओयालेन/शेथालेन।

तुम/वह उसको खिलाओगे/सिखाओगे।

तूमि/से तাকে थाओयावे/शेथावे।

तूने उसको खिलाया/सिखाया।

तूमप ओके थाओयालि/शेथालि

कुछ क्रियाओंको प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए संयुक्त क्रिया का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे:

मा छेलेके घुम पाड़ान।

माँ बच्चे को सुला देती है।

